2

वर्ण-विचार
(Phonology)

वर्ण (Letter)

भाषा वाक्यों के मेल से, वाक्य शब्दों के मेल से और शब्द वर्णों के मेल से बनते हैं। वर्ण क्या है? आइए, इसे जानते हैं, इस उदाहरण के द्वारा :

वाक्य ➡ चंद्रमा निकल आया है।

शब्द ➡ चंद्रमा निकल आया है।

वर्ण ➡	च् + अं + द् + र् + अ + म् + आ चंद्रमा	न् + इ + क् + अ + ल् + अ निकल	आ + य् + आ आया	ह् + ऐ है

इसी प्रकार प्रत्येक शब्द का उच्चारण करते समय हमारे मुख से अनेक ध्वनियाँ निकलती हैं। जब मुख से उच्चारित इन ध्वनियों को लिखा जाता है, तब वे वर्ण अथवा अक्षर कहलाते हैं। इस प्रकार,

वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके खंड नहीं किए जा सकते, **वर्ण** अथवा **अक्षर** कहलाती हैं।

वर्णमाला (Alphabet)

जब किसी भाषा के वर्णों को क्रमबद्ध रूप में लिखा जाता है, तब वह वर्णों की माला अर्थात् वर्णमाला कहलाती है।

वर्णों के व्यवस्थित समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

हिंदी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण होते हैं जो इस प्रकार हैं:

स्वर	—	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ	11
अयोगवाह	—	अं अः	2
व्यंजन	—	क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् र् ल् व् श् ष् स् ह्	पंचम वर्ण 33
संयुक्त व्यंजन	—	क्ष् त्र् ज्ञ् श्र्	4
अतिरिक्त वर्ण	—	ड़् ढ़्	2

एक नज़र में

स्वर	+	अयोगवाह	+	व्यंजन	+	संयुक्त व्यंजन	+	अतिरिक्त वर्ण	➡	कुल योग
11		2		33		4		2	➡	52

वर्णों के भेद (Kinds of Letters)

उच्चारण और प्रयोग के आधार पर हिंदी वर्णमाला के वर्णों के दो भेद होते हैं :

1. स्वर
2. व्यंजन

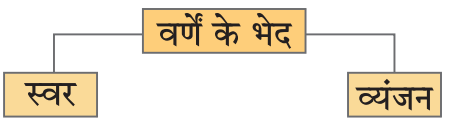

1. स्वर (Vowels)

जिन वर्णों का उच्चारण अन्य ध्वनियों की सहायता के बिना किया जाता है, उन्हें स्वर कहते हैं। इनके उच्चारण में वायु बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर निकलती है। हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर होते हैं जो इस प्रकार हैं :

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वरों के भेद (Kinds of Vowels) : उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर स्वर के तीन भेद हैं :

क. ह्रस्व स्वर ख. दीर्घ स्वर ग. प्लुत स्वर

क. ह्रस्व स्वर (Short Vowels) : जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में चार होते हैं: अ, इ, उ, ऋ।

ख. दीर्घ स्वर (Long Vowels) : जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से लगभग दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में सात होते हैं: आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

ग. प्लुत स्वर (Longer Vowels) : जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं; जैसे— ओऽम्, राऽम आदि। प्लुत स्वर का चिह्न (ऽ) है। इसका प्रयोग प्राय: दूर से पुकारते समय किया जाता है।

ह्रस्व स्वर
अ, इ, उ, ऋ

दीर्घ स्वर
आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

प्लुत स्वर
ऽ

विशेष : हिंदी में प्लुत स्वर का प्रयोग अब बिलकुल बंद हो गया है। इसका प्रयोग अब केवल संस्कृत भाषा में होता है।

स्वरों की मात्राएँ (Signs of Vowels)

जब स्वरों को व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखा जाता है, तब ये अपने मूल रूप में प्रयोग नहीं होते। इनका स्वरूप बदल जाता है। व्यंजनों के साथ इनके चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। स्वरों के ये चिह्न मात्रा कहलाते हैं। 'अ' को छोड़कर शेष सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं।

हिंदी में स्वरों की मात्राएँ निम्न प्रकार हैं :

स्वर :	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा :	×	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
शब्द :	कल	काल	किला	कीप	कुल	कूप	कृपा	केला	कैलाश	कोट	कौआ

याद रखिए

- 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती। प्रत्येक व्यंजन का उच्चारण 'अ' स्वर की सहायता से किया जाता है।
- जब किसी व्यंजन में 'अ' की ध्वनि नहीं मिली होती, तब उस व्यंजन के नीचे एक तिरछी छोटी रेखा लगा देते हैं, जिसे हल् चिह्न या हलंत (्) कहते हैं; जैसे—क्, च्, झ्, ठ्, त्, थ् आदि।
- जब व्यंजन में 'अ' की ध्वनि मिली होती है, तब उस व्यंजन के नीचे हलंत नहीं लगता। उस व्यंजन को इस प्रकार लिखते हैं; जैसे—क, च, झ, ठ, त, थ आदि।
- 'ऋ' की मात्रा प्राय: वर्णों के नीचे ही लगाई जाती है।
- 'र' में 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ उसके नीचे या ऊपर न लगाकर 'र' के मध्य (पेट) भाग में लगाई जाती हैं; जैसे—

र् + उ = रु ➤ रुपया, रुचि, रुस्तम

र् + ऊ = रू ➤ रूप, रूठ, अमरूद

अयोगवाह (Improper Consonants)

हिंदी वर्णमाला में अं और अः दो वर्ण और होते हैं, जिन्हें अयोगवाह कहते हैं। स्वतंत्र रूप से प्रयोग न होने के कारण इनकी गणना न तो स्वर में होती है और न ही व्यंजन में। व्याकरण की दृष्टि से 'अं' को अनुस्वार और 'अः' को विसर्ग कहते हैं। अतएव,

जो वर्ण स्वर और व्यंजन के अतिरिक्त होते हैं, उन्हें **अयोगवाह** कहते हैं।

1. अनुस्वार (Nasal Sound ं) : जब किसी वर्ण का उच्चारण करते समय वायु केवल नाक से बाहर आती है, तब उसे दर्शाने के लिए शिरोरेखा के ऊपर बिंदु (ं) का चिह्न लगाया जाता है। इसे ही अनुस्वार कहते हैं; जैसे—पंख, रंक, गंध आदि।

2. अनुनासिक (Semi-Nasal Sound ँ) : जब किसी वर्ण का उच्चारण करते समय वायु नाक और मुख दोनों से बाहर निकलती है, तब उस वर्ण के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगाया जाता है। इसे ही अनुनासिक कहते हैं; जैसे—दाँत, आँख, अँगूठी आदि।

याद रखिए

- जब शिरोरेखा के ऊपर कोई मात्रा न हो, तब चंद्रबिंदु (ँ) का प्रयोग किया जाता है, अन्यथा बिंदु (ं) का प्रयोग होता है; जैसे–
- मैं – मैं नहीं – नहीं क्योंकि – क्योंकि गेंद – गेंद

3. विसर्ग (Colon :) : इस ध्वनि का उच्चारण 'ह्' के समान होता है। यह स्वर नहीं है, लेकिन इसे 'अ' के साथ जोड़कर 'अः' की तरह लिखा जाता है। इसका प्रयोग प्रायः शब्द के अंत में किया जाता है; जैसे—अतः, प्रातः, स्वतः, प्रायः, शनैः आदि।

• **आगत ध्वनि :** ऑ अर्थात् अर्धचंद्र, अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों को लिखते समय प्रयोग किया जाता है; जैसे—डॉक्टर, कॉपी, टॉफ़ी, बॉल आदि।

अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर (Difference between Nasal & Semi-Nasal Sounds)

बच्चो! आप अभी अनुस्वार और अनुनासिक के बारे में पढ़ चुके हैं। उसी आधार पर इसमें कुछ अंतर होता है। अनुस्वार के उच्चारण में वायु केवल नाक से बाहर निकलती है, जबकि अनुनासिक के उच्चारण में वायु मुख और नाक दोनों से बाहर निकलती है; जैसे—हंस (अनुस्वार) और हँस (अनुनासिक) आदि।

2. व्यंजन (Consonants)

जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इनके उच्चारण में वायु थोड़ा रुककर मुख से बाहर निकलती है। हिंदी में व्यंजनों की संख्या 33 (क् से ह्) है। संयुक्त व्यंजनों को मिलाकर इनकी संख्या 37 है।

व्यंजन के भेद (Kinds of Consonants) : व्यंजनों के निम्नलिखित दो आधारों पर भेद किए जा सकते हैं :

क. स्पर्श के आधार पर ख. श्वास-मात्रा के आधार पर

क. स्पर्श के आधार पर (On the Basis of Touch) : स्पर्श के आधार पर व्यंजनों के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं :

1. स्पर्श व्यंजन 2. अंतःस्थ व्यंजन 3. ऊष्म व्यंजन

1. स्पर्श व्यंजन (Mutes) : जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के विभिन्न भागों (कंठ, तालु, मूर्धा, दाँत, ओंठ) को स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इन्हें पाँच वर्गों में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैं :

वर्ग		व्यंजन					उच्चारण-स्थान	प्रकार
कवर्ग	➤	क	ख	ग	घ	ङ	कंठ	कंठ्य
चवर्ग	➤	च	छ	ज	झ	ञ	तालु	तालव्य
टवर्ग	➤	ट	ठ	ड	ढ	ण	मूर्धा	मूर्धन्य
तवर्ग	➤	त	थ	द	ध	न	दंत	दंत्य
पवर्ग	➤	प	फ	ब	भ	म	ओष्ठ	ओष्ठ्य

याद रखिए

- प्रत्येक वर्ग के अंतिम वर्ण को 'पंचम वर्ण' कहते हैं।
- प्रत्येक वर्ग का नाम अपने वर्ग के प्रथम वर्ण के आधार पर रखा गया है।

2. अंत:स्थ व्यंजन (Semi-vowels) : जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु मुख के किसी भाग को पूरी तरह स्पर्श नहीं करती, उन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं। अंत:स्थ व्यंजन चार होते हैं : य, र, ल, व।

3. ऊष्म व्यंजन (Sibilants) : ऊष्म का अर्थ है—गरम। जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु मुख के विभिन्न भागों से रगड़ खाकर ऊष्मा (गरमी) पैदा करती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ऊष्म व्यंजन चार होते हैं: श, ष, स, ह।

ख. श्वास-मात्रा के आधार पर (On the Basis of Breathing) : श्वास-वायु के आधार पर हिंदी में व्यंजनों के दो भेद हैं :

1. अल्पप्राण व्यंजन 2. महाप्राण व्यंजन

1. अल्पप्राण व्यंजन (Non-aspirated Consonants) : जिन वर्णों के उच्चारण में वायु की मात्रा कम होती है, वे अल्पप्राण व्यंजन कहलाते हैं। हिंदी वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण 'अल्पप्राण व्यंजन' होता है; जैसे—

कवर्ग का पहला वर्ण	— क,	तीसरा वर्ण	— ग,	पाँचवाँ वर्ण	— ङ
चवर्ग का पहला वर्ण	— च,	तीसरा वर्ण	— ज,	पाँचवा वर्ण	— ञ
टवर्ग का पहला वर्ण	— ट,	तीसरा वर्ण	— ड,	पाँचवाँ वर्ण	— ण
तवर्ग का पहला वर्ण	— त,	तीसरा वर्ण	— द,	पाँचवाँ वर्ण	— न
पवर्ग का पहला वर्ण	— प,	तीसरा वर्ण	— ब,	पाँचवाँ वर्ण	— म

इनके अतिरिक्त ड़, य, र, ल, व वर्ण भी अल्पप्राण व्यंजन हैं।

2. महाप्राण व्यंजन (Aspirated Consonants) : जिन वर्णों के उच्चारण में वायु की मात्रा अधिक होती है, वे महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं। हिंदी वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा वर्ण 'महाप्राण व्यंजन' होता है : जैसे—

कवर्ग का दूसरा वर्ण	— ख,	चौथा वर्ण	— घ
चवर्ग का दूसरा वर्ण	— छ,	चौथा वर्ण	— झ
टवर्ग का दूसरा वर्ण	— ठ,	चौथा वर्ण	— ढ
तवर्ग का दूसरा वर्ण	— थ,	चौथा वर्ण	— ध
पवर्ग का दूसरा वर्ण	— फ,	चौथा वर्ण	— भ

इनके अतिरिक्त ढ़, श, ष, स, ह वर्ण भी महाप्राण व्यंजन हैं।

✦ संयुक्त व्यंजन (Compound Consonants)

दो भिन्न व्यंजनों के परस्पर मेल से बने व्यंजन **संयुक्त व्यंजन** कहलाते हैं।

संयुक्त व्यंजन मुख्य रूप से चार होते हैं :

क् + ष = क्ष	त् + र = त्र	ज् + ञ = ज्ञ	श् + र = श्र
यक्ष, दक्ष, तक्षक	पत्र, मित्र, चित्र	यज्ञ, ज्ञान, विज्ञान	श्रम, श्रमिक, विश्राम

विशेष : संयुक्त व्यंजन में पहला व्यंजन स्वर रहित तथा दूसरा व्यंजन स्वर सहित होता है।

✦ द्वित्व व्यंजन (Dubious Consonants)

जब एक व्यंजन अपने ही जैसे दूसरे व्यंजन से मिलता है, तो उसे **द्वित्व व्यंजन** कहते हैं।

जैसे—

क् + क	= क्क	➤ पक्का, छक्का	ट् + ट	= ट्ट	➤ कट्टा, सट्टा
च् + च	= च्च	➤ कच्चा, बच्चा	त् + त	= त्त	➤ छत्ता, सत्ता
ज् + ज	= ज्ज	➤ छज्जा, मज्जा	न् + न	= न्न	➤ छिन्न, भिन्न

विशेष : द्वित्व व्यंजन में भी पहला व्यंजन स्वर रहित तथा दूसरा व्यंजन स्वर सहित होता है।

✦ अतिरिक्त व्यंजन (Aspirated Consonants)

जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वा ऊपर उठकर मूर्धा को स्पर्श करती हुई तुरंत नीचे गिरती है, उन्हें **अतिरिक्त व्यंजन** कहते हैं।

ड़, ढ़ 'अतिरिक्त व्यंजन' हैं। इन व्यंजनों से कोई शब्द आरंभ नहीं होता। इनका प्रयोग शब्द के अंत अथवा मध्य में होता है; जैसे—

ड़ ➤ पेड़, सड़क, रगड़, पहाड़ आदि।

ढ़ ➤ गढ़, बुढ़िया, कढ़ाई, बाढ़ आदि।

✦ संयुक्ताक्षर

जब एक स्वर रहित व्यंजन अन्य स्वर सहित व्यंजन से मिलता है, तब वह **संयुक्ताक्षर** कहलाता है।

जैसे—

क् + त = क्त ➤ वक्त, संयुक्त

स् + व = स्व ➤ स्वाद, स्वाधीन

स् + थ = स्थ ➤ स्थान, विस्थापित

द् + ध = द्ध ➤ युद्ध, शुद्ध

विशेष : यहाँ दो अलग-अलग व्यंजन मिलकर कोई नया व्यंजन नहीं बनाते।

'र' का संयोग

'र' के संयोग में सबसे अधिक गलती होने की संभावना रहती है। 'र' के संयोग के चार नियम हैं :

1. र्‍ जब 'र' स्वर रहित होता है जिसे रेफ़ भी कहते हैं, तब यह अपने से आगे वाले वर्ण के ऊपर लगाया जाता है; जैसे—

र् + य = र्य ➤ सूर्य   र् + द = र्द ➤ मर्द   र् + म = र्म ➤ धर्म

2. ्र 'र' से पूर्व कोई भी स्वर रहित व्यंजन होने पर 'र' को उसके पैरों में लगाया जाता है; जैसे—

त् + र = त्र ➤ छत्र   क् + र = क्र ➤ चक्र   प् + र = प्र ➤ प्रभा

3. ्र 'ट्' तथा 'ड्' के साथ 'र' का संयोग होने पर 'र' उनके नीचे दो तिरछी रेखाओं के रूप में प्रयोग होता है; जैसे—

ट् + र = ट्र ➤ ट्रक, ट्रेन   ड् + र = ड्र ➤ ड्रम, ड्रामा

4. 'श्' के साथ 'र' जुड़ने पर 'श्र' और 'स' के साथ 'र' का संयोग होने पर 'स्र' बन जाता है; जैसे—

श् + र = श्र ➤ श्रम, श्रेष्ठ   स् + र = स्र ➤ स्रोत, सहस्र

वर्ण-विच्छेद (Disjoin)

'विच्छेद' का अर्थ है—अलग करना।

शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग करके लिखना **वर्ण-विच्छेद** कहलाता है।

वर्ण-विच्छेद करते समय स्वरों को मूल रूप में लिखा जाता है तथा व्यंजनों के नीचे हलंत (्) लगाना आवश्यक होता है।

इन उदाहरणों को देखिए :

पीतल — प् + ई + त् + अ + ल् + अ	किताब — क् + इ + त् + आ + ब् + अ
कचालू — क् + अ + च् + आ + ल् + ऊ	कृपालु — क् + ऋ + प् + आ + ल् + उ
करेला — क् + अ + र् + ए + ल् + आ	लठैत — ल् + अ + ठ् + ऐ + त् + अ
कंगन — क् + अं + ग् + अ + न् + अ	नौकर — न् + औ + क् + अ + र् + अ

याद रखिए

- उच्चारण के समय वर्ण ध्वनि जिस स्थान पर आ रही है, विच्छेद करते समय उसे उसी स्थान पर लिखें।

आओ दोहराएँ

- वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके खंड नहीं किए जा सकते, वर्ण कहलाती है।
- हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं: स्वर और व्यंजन।
- स्वरों की सहायता से उच्चारित ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती हैं।
- स्पर्श के आधार पर व्यंजन के तीन भेद होते हैं : स्पर्श व्यंजन, अंत:स्थ व्यंजन, ऊष्म व्यंजन।
- श्वास-मात्रा के आधार पर व्यंजन के दो भेद हैं : अल्पप्राण व्यंजन, महाप्राण व्यंजन।
- दो विभिन्न व्यंजनों के परस्पर मेल से बने व्यंजन संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं : क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

अब बताइए

बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. दिए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने (✓) चिह्न लगाइए :

क. हिंदी वर्णमाला में कुल कितने वर्ण होते हैं?

(a) 52 ☐ (b) 40 ☐ (c) 35 ☐ (d) 11 ☐

ख. हिंदी वर्णमाला में कितने स्वर होते हैं?

(a) 13 ☐ (b) 33 ☐ (c) 22 ☐ (d) 11 ☐

ग. किस स्वर के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है?

(a) ह्रस्व स्वर ☐ (b) दीर्घ स्वर ☐ (c) प्लुत स्वर ☐ (d) इनमें से कोई नहीं ☐

घ. स्वरों के चिह्न क्या कहलाते हैं?

(a) मात्रा ☐ (b) वर्ण ☐ (c) व्यंजन ☐ (d) आगत ध्वनि ☐

2. सोचकर उत्तर लिखिए:

क. वर्ण और वर्णमाला को परिभाषित कीजिए।

ख. स्वर के भेद उदाहरण सहित लिखिए।

ग. अयोगवाह किसे कहते हैं? अनुनासिक और अनुस्वार में अंतर स्पष्ट कीजिए।

घ. व्यंजन से क्या आशय है? इसके भेदों का वर्णन सोदाहरण कीजिए।

ङ. 'र' के संयोग के प्रमुख नियमों को स्पष्ट कीजिए।

3. सही वाक्य के सामने (✓) और गलत वाक्य के सामने (✗) लगाइए:

क. 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती। ☐

ख. हिंदी वर्णमाला में 'अं' और 'अः' अतिरिक्त व्यंजन कहलाते हैं। ☐

ग. हिंदी में व्यंजनों की संख्या 33 है। ☐

घ. संयुक्त व्यंजन मुख्यतः 5 होते हैं। ☐

रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment)

दी गई वर्ग पहेली से संयुक्त वर्णों के वर्ण-विच्छेद चुनकर लिखिए:

क्		र	
	र		ष
त्		ज्	
	श्		ञ

क्ष	क् + ष
त्र	
ज्ञ	
श्र	